Dr. Avinash Kumar
D.1.H - Chapter-09 (Nature of Pressure Groups and their Role)
D.1.S - Chapter-09 (Pressure Groups)

लोकतांत्रिक व्यवस्था में दबाव समूह की भूमिका -

प्रारंभ में दबाव समूहों को अनैतिक संगठन मानते हुए हेय दृष्टि से देखा जाता था और जनतन्त्रीय धारणा में दबाव समूहों को कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं था। धीरे-धीरे स्थिति में परिवर्तन आया। राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूहों का महत्व और मूल्य समझा जाने लगा और इन्हें राजनीतिक जीवन के लिए अनिवार्य मान लिया गया। आज तो सभी पक्षों द्वारा इस विचार को अपना लिया गया है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में दबाव समूह न केवल आवश्यक वरन् वांछनीय भी हैं।

आज राजनीति के यथार्थवादी अध्ययनकर्ता इस बात पर बल देते हैं कि यदि राजव्यवस्था को सांगोपांग समझना है तो इन गैर सरकारी एवं अज्ञात संगठनों (दबाव समूहों) की गतिविधियों का अध्ययन करना न केवल उपयोगी वरन् अपरिहार्य है। दबाव समूहों का महत्व निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है और आज इन्होंने उस स्थिति को प्राप्त कर लिया है जिसे प्रो. एस. ई. फाइनर 'अज्ञात साम्राज्य' की संज्ञा देते हैं। ओरस्टेन रैनिन और रिचर्ड डी. लम्बर्ट ने इसे अनौपचारिक सरकार कहा है और डी. डी. रैकिन ने इसका नाम अदृश्य सरकार रखा है।

(i) दबाव समूहों को लोकतंत्र की अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है। विशिष्ट नीतियों के समर्थन अथवा विरोध के लिए ये लोकमत का निर्माण करते हैं या लोकमत तैयार करते हैं। पुनः लोकमत को शिक्षित करके, आँकड़े इकट्ठे करके, निर्माताओं के पास आवश्यक सूचनाएँ पहुँचाकर अपने अभीष्ट की प्राप्ति करना आज जनतान्त्रिक प्रक्रिया का अंग बन गया है, जो लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक भी है।

(ii) शासन की सूचनाओं के गैर सरकारी स्रोत के रूप में दबाव समूह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये आँकड़े इकट्ठे करते हैं, शोध करते हैं तथा सरकार को अपनी कठिनाइयों से परिचित कराते हैं।

Avinash

Scanned with CamScanner

(iii) आज दबाव समूहों का अस्तित्व एक ऐसी संस्था के रूप में है जिनके पास इस दृष्टि से काफी शक्ति होती है कि वे स्वार्थ या हित विशेष की रक्षा के लिए सरकारी मशीनरी पर उपयोगी व सफल प्रभाव डाल सकें।

(iv) दबाव समूह अपने साधनों द्वारा सरकारी निरंकुशता को परिसीमित करते है।

(v) दबाव समूह लोकतान्त्रिक व्यवस्था में व्यक्तिगत हितों का राष्ट्रीय हितों के साथ सामंजस्य स्थापित करते है। ये समूह नागरिक और सरकार के बीच संवाद साधन का कार्य करते हैं।

रॉडी के अनुसार – निर्वाचित नेता दबाव समूहों के माध्यम से अपने निर्वाचकों की इच्छा-आकांक्षाओं का पता लगा लेते हैं। अतः इन्हें और-सरकारी संचार सूत्र कहा जा सकता हैं।

(vi) ये विभिन्न हितों के बीच सन्तुलन बनाने का भी कार्य करते है। भिन्न-भिन्न दबाव समूह स्वयं के हितों को प्राप्त करना चाहते है, किन्तु उनको एक-दूसरे से प्रतियोगिता करने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे समाज और शासन में सन्तुलन स्थापित हो जाता है और यह सन्तुलनकारी प्रवृत्ति समाज को उस स्थिति से बचाती है जिसमें कि व्यक्तिगत समुदाय ही सारी शक्ति को हथिया लेते हैं।

(vii) ये क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करते हैं।

(viii) अपनी विशेषता तथा कुशलता के कारण ये गुट विधि-निर्माण समितियों के सदस्यों को आवश्यक परामर्श देते है, इस प्रकार से विधि-निर्माण में विधायकों की सहायता करते है। दबाव समूहों की इन्हीं उपयोगिता के कारण इन्हें 'विधानमण्डल के पीछे का विधानमण्डल' कहा जा सकता हैं।

निष्कर्षतः, दबाव समूह लोकतान्त्रिक व्यवस्था का ही इसका भाग है और इन्हें 'लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्राणवायु' भी कहा जा सकता है।

Animesh

Scanned with CamScanner